(ग) मुझे प्राय: गालियों के सम्बोधन से पुकारा जाता। स्कूल से शाम को घर आते ही पशुओं को चारा-पानी देने का काम मुझे सौंप दिया जाता। रात में सबसे बड़ा संकट यह था की चिराग न होने से मैं कुछ भी पढ़ नहीं पाता था। पहले एक ढिबरी जलाकर पढ़ा करता था, किन्तु दसवीं कक्षा में उसे जलाने के लिए मिट्टी का तेल मिलना बंद हो गया। घर में एक लालटेन जरूर थी, किन्तु घर वाले इसका इस्तेमाल बहुउद्देशीय कार्यों के लिए किया करते थे। अत: रात में न पढ़ पाना मुझे सबसे ज्यादा खलता था।

अथवा

पुरुष ने उसके अधिकार अपने सुख की तुला पर तोले, उसकी विशेषता पर नहीं; अत: समाज की सब व्यवस्थाओं में उसके और पुरुष के अधिकारों में एक विचित्र विषमता मिलती है। जहां तक सामाजिक प्राणी का प्रश्न है, स्त्री पुरुष के समान ही सामाजिक सुविधाओं की अधिकारिणी है, परंतु केवल अधिकार की दुहाई, देकर ही तो वह सबल-निर्बल का चिरंतन संघर्ष और उससे उत्पन्न विषमता नहीं मिटा सकती।

6. किसी **एक** विषय पर टिप्पणी लिखिए - (6)

(क) एलिस एक्का की कहानी में प्रकृति और समाज

(ख) मुर्दहिया और दलित चेतना

(4000)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 6102 **J**

Unique Paper Code : 2052103602

Name of the Paper : अस्मितामूलक हिंदी साहित्य (दलित विमर्श, स्त्री विमर्श एवं आदिवासी विमर्श)

Name of the Course : **DSC : Hindi**

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. स्त्री विमर्श को परिभाषित करते हुए उदारवादी और मार्क्सवादी अवधारणाओं पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

आदिवासी विमर्श के विभिन्न पक्षों को स्पष्ट कीजिए।

2. 'यही सच है' कहानी स्त्री के प्रेम और द्वन्द्व की कथा है – स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'पच्चीस चौंका डेढ़ सौ' कहानी समता तथा मुक्ति के लिए संघर्षरत दलित चेतना की कहानी है – समीक्षा कीजिए।

3. 'सोनवा का पिंजरा' कविता का मूल भाव स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'कहाँ हो तुम माया' कविता में निहित आदिवासी स्त्री की समस्याओं और संघर्षों को उजागर कीजिए।

4. स्त्री की पराधीन स्थिति के लिए महादेवी वर्मा किन कारकों को जिम्मेदार मानती है–विस्तारपूर्वक उल्लेख कीजिए। (15)

अथवा

'जंगल से आगे' आत्म संस्मरण में निहित आदिवासी स्त्री के अस्तित्व और संघर्ष की गाथा को स्पष्ट कीजिए।

5. निम्नलिखित आंशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए – (8×3)

(क) बालमन की यह खरोंच ग्रन्थि बन गयी थी। जब भी पच्चीस की संख्या पढ़ता या लिखता, उसे पच्चीस चौंका डेढ़ सौ ही याद आता। साथ ही याद आता पिताजी का विश्वास भरा चेहरा और मास्टर शिवनारायाण मिश्रा का गाली–गलौच करता लाल–लाल

गुस्सैल चेहरा। दोनों चेहरे एक साथ स्मृति में दबाए पच्चीस चौका डेढ़ सौ की अंधेरी दुर्गम गलियों में भटकने लगा। जैसे–जैसे बड़ा होने लगा, कई सवाल उसके मन को विचलित करने लगे। जिनके उत्तर उसके पास नहीं थे।

अथवा

ननकु ने, सुना तो कहा– "झालो दीदी, जेरकु भाई ठीक कह रहे हैं। दुख भरे गीत बड़े मधुर होते हैं सुनने में। परंतु जेरकु भाई को यह भी जानना चाहिए कि दुख के मधुर गीत गाते रहने से पेट नहीं भरेगा और सचमुच भूखा पेट से कोई दर्द भरा गीत भी कब तक गया सकेगा? जेरकु भाई, भूख मिटनी चाहिए पहले तब गीत, नाच और नगाड़े सुहावने लगेंगे। भूखे पेट नहीं।"

(ख) देशवां आजाद अहै हम तो गुलमवाँ,
हमरे लिए न सरकार।
एस कौनउ जुगुति लगावा भइया 'मितई'
हमरउ करावा उरधार।।

अथवा

पानदान वह छोटा–सा डिब्बा
रख दूँगी उसमें प्यारे–प्यारे तारे
आसमान –
बुरा मत मानना
देखा है मैंने हमेशा उनमें तुम्हीं को।